प्राक्कथन

शिक्षा व्यक्ति का बहुमुखी विकास करती है, उसे चिन्तन की प्रेरणा और योग्यता प्रदान करती है, उसे नए–नए विज्ञानों, विचारधाराओं से जोड़ती है। सम्भवतः इसीलिए किसी भी राष्ट्र के निर्माण एवं प्रगति उसके सामाजिक/ आर्थिक स्तर के उन्नयन एवं परिवर्तन और इस हेतु वांछित मानव–संसाधन के निर्माण और विकास की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका ही अहम् रही है। किसी काल में शिक्षा का उद्देश्य मात्र सामाजिकता का संचार कर समाज के नए सदस्यों को सामाजिक प्राणी बनाना था, उनमें विभिन्न कौशलों, समताओं, मानवीय मूल्यों का विकास, प्रस्फुटन एवं संचरण कर उन्हें धार्मिक विचारधाराओं व प्रवृत्तियों से युक्त कर एक सुसंस्कृत, संवेदनशील, विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण मानव शक्ति का निर्माण करना था, जिससे कि सुन्दर, सशक्त और समृद्ध समाज की रचना की जा सके। परन्तु समय परिवर्तन के साथ समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और दृष्टिकोणों में भी परिवर्तन हुआ, शिक्षा के मूल स्वरूप व शैक्षिक परिस्थितियों में भिन्नता व गतिशीलता आई और उसके संगत देशकाल के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से उसकी आधारभूत संकल्पनाओं, मान्यताओं, उद्देश्यों और लक्ष्यों में भी परिवर्तन, संशोधन और परिवर्तन हुआ। वह केवल उपरोक्त कथित उद्देश्यों की प्राप्ति का ही नहीं, अपितु जीविकोपार्जन का साधन बन गई। आधुनिकता की दौड़ में मानव को उन्नति पथ पर ले जाने वाली, समसामयिक परिस्थितियों/समस्याओं से जूझने–निपटनें की कला और युक्ति लिखने वाली, जीवन मार्ग प्रशस्त करने वाली एक अपूर्व, अचूक शक्ति और शस्त्र बन गई। अतः आज के सन्दर्भ में यह कतई आश्चर्यजनक ही है कि शिक्षा आधुनिक समाज का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग है, सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र की समस्या के निदान और उपचार का मूलमंत्र है और प्रत्येक देश/राष्ट्र के राष्ट्रीय जीवन की विशेष प्राथमिकता है।

किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि देश में पर्याप्त मात्रा में ऐसे मानव संसाधन उपलब्ध हो जो प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का समुचित उपयोग और प्रयोग करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों के विकास में सक्रिय सहभागी बन सके। मानव संसाधन के विकास में सर्व प्रमुख स्थान शिक्षा का है और वह भी प्राथमिक शिक्षा का जो पूरी शिक्षा व्यवस्था का प्रथम सोपान है, नींव का पत्थर है। उचित शिक्षा के अभाव में भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में विभिन्न कार्यों हेतु प्रचुर मात्रा में दक्ष मानव संसाधन की कमी आज अधिकारी क्षेत्रों में महसूस की जा रही है। विकास की इस दौड़ में हम पिछड़ न जाए इसके लिए आवश्यक है कि देश में सही शिक्षा नीतियों का अंगीकरण द्वारा प्राथमिक शिक्षा का न केवल विस्तार किया जाए अपितु उसमें गुणात्मक सुधार के भी प्रभावी उपाय किये जाएँ।

सरकारी योजनाओं के लक्ष्य और दूरगामी प्रभाव कागजों पर तो बहुत भव्य नजर आते हैं, परन्तु वास्तविकता और व्यवहारिकता के धरातल पर वे प्रायः खरे नहीं उतरते दिखते हैं। इसी भावना के वशीभूत प्रस्तुत शोधकर्ता को यह जानने की जिज्ञासा हुई कि राज्य सरकार द्वारा संचालित इस नए ''स्कूल चलो अभियान'' कार्यक्रम की क्या स्थिति है ? इसके माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति कहां तक हो रही है ? हो भी पा रही है या नहीं ? यह जन आकांक्षाओं के सूत्र के अनुसार प्रगति पर है अथवा नहीं ? योजना व्यय की तुलना में लक्ष्यों की उपलब्धि हो पा रही है अथवा नहीं ? कहीं यह प्रशासनिक अधिकारियों की कोरी कल्पना ही तो नहीं है ? प्रस्तुत शोध इन्हीं प्रश्नों, जिज्ञासाओं की परिणति है।

शोधकर्ता

Sanjeev Singh

दिनांक :

संजीव रवि कृष्ण कुमार सिंह

एम0एस–सी0 (रसायन)

एम0एड0